अगर तुम युवा हो!

• शशि प्रकाश

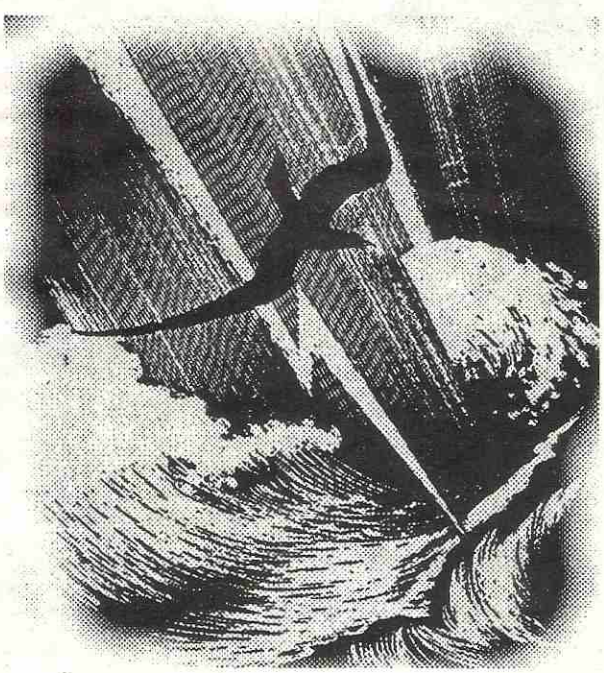

गूँज रही हैं चारो ओर
झींगुरों की आवाज़ें।
तिलचट्टे फदफदा रहे हैं
अपने पंख।
जारी हैं अभी भी नपुंसक विमर्श।
कान मत दो इनपर।
चिन्ता मत करो।
तुम्हारे सधे कदमों की धमक से
सहमकर शान्त हो जायेंगे
अँधेरे के सभी अनुचर।
जियो इस तरह कि
आने वाली पीढ़ियों से कह सको–
'हम एक अँधेरे समय में पैदा हुए
और पले-बढ़े
और लगातार उसके खिलाफ सक्रिय रहे'
और तुम्हें बिल्कुल हक होगा
यह कहने का बशर्ते कि
तुम फैसले पर पहुँच सको
बिना रुके, बिना ठिठके।
मत भूलो कि देर से फैसले पर पहुँचना
आदमी को बूढ़ा कर देता है।
जीवन के प्याले से छककर पियो
और लगाओ चुनौती भरे ठहाके
पर कभी न भूलो उनको
जिनके प्याले खाली हैं।
आश्चर्यजनक हों तुम्हारी योजनाएँ
पर व्यावहारिक हों।
सागर में दूर तक जाने की
बस ललक भर ही न हो,
तुम्हारी पूरी ज़िन्दगी ही होनी चाहिए
एक खोजी यात्रा।

सपने देखने की आदत
बनाये रखनी होगी
और मुँह-अँधेरे जागकर
सूरज की पहली किरण के साथ
सक्रिय होने की आदत भी
डाल लेनी होगी तुम्हे।
कुछ चीज़ें धकेल दी गयी हैं
अँधेरे में।
उन्हें बाहर लाना है,
जड़ों तक जाना है
और वहाँ से ऊपर उठना है
टहनियों को फैलाते हुए
आकाश की ओर।
सदी के इस छोर से
उठानी है फिर आवाज़,
'मुक्ति' शब्द को
एक घिसा हुआ सिक्का होने से
बचाना है।
जनता की सुषुप्त-अज्ञात मेधा तक
जाना है
जो जड़-निर्जीव चीज़ों को
सक्रिय जीवन में रूपान्तरित करेगी
एक बार फिर।
जीवन से अपहृत चीज़ों की
बरामदगी होगी ही एक न एक दिन।
आकाश को प्राप्त होगा
उसका नीलापन,
वृक्षों को उनका हरापन,
तुषारनद को उसकी श्वेताभा
और सूर्योदय को उसकी लाली
तुम्हारे रक्त से,
अगर तुम युवा हो।